प्रेमक रोग

प्रबोध नारायण सिंह

प्रेम क रोग

प्रोफेसर प्रबोध नारायण सिंह

प्रकाशक
लोक साहित्य परिषद
कलकत्ता-४५

प्रथम संस्करण :
होली, १९६८ ई०

प्रकाशक :
श्यामसुन्दर स्वाईका, एम०ए०, जे०पी०
मन्त्री
लोक साहित्य परिषद,
१६२/८०, लेक गार्डेन्स, कलकत्ता-४५

मुद्रक :
सिंह प्रेस
कलकत्ता-४५

मूल्य :
दू टाका

भगवती क दृष्टियें एहि रोग क मर्मज्ञ

श्रीमती कमलाक्षी झा

एवं

श्री रेवती रमण झा

कें—

—भगवन्

पात्र-परिचिति

रमेश—नायक; माया क प्रेमी।

मोहन—माया क ममेरा भाइ; रमेश क मित्र।

फुचाइ झा—माया क पिता; मोहन क पीसा।

कविराज

डाक्टर कुन्दू—होमियोपैथी डाक्टर।

डाक्टर चटर्जी—स्थानीय सर्जन।

ओझा—तान्त्रिक तथा भगता।

ज्योतिषी

मिथिला संघ क तीन कार्यकर्त्ता।

पुरोहित

माया—फुचाइ झा क दुलरुआ बेटी—हुनक एकमात्र सन्तान; कालेज क प्राक्तन छात्रा।

———

प्रेम क रोग

प्रथम अंक

प्रथम दृश्य

[यवनिका उठबाक संगहि देखल जाइछ जे एक मध्यवित्त श्रेणी क गृहस्थक प्रकोष्ठ मे ठाढ़ दू युवक मित्र—मोहन और रमेश ठहाका मारि रहल छथि। बहुत देर धरि दुनू यार दिल खोलि कए हँसि रहल छथि।]

मोहन—नहि; हम एहि सब मे नहि। हे [दुनू कान पर हाथ रखैत] इयैह हम कान पकड़ैत छी जे कहियो जौं हम प्रेम करी! भला, प्रेमो कोनो नीक लोग करैत अछि?

रमेश—कियैक? प्रेम त बहुतो लोग करैत अछि। आ' नीको लोग सब करैत अछि।

मोहन—त करू ने अहाँ। रोकैत अछि के? औ, हमर पीसा कहैत छथि जे प्रेम सँ बढ़ि कए कोनो रोग नहि होइत छैक। अनेरे, प्रेम मे करेज धक-धक धक-धक करैत रहत आ' कौंढ़ काँपैत रहत।

रमेश—जेहने अहाँ क पीसा आ' तेहने अहाँ। प्रेम त भगवान् कृष्णो कैने छलाह।

मोहन—हाय रे भगवान कृष्ण ! त तेकर फल की भेलन्हि से जानैत छियैक ? पीसा कहैत छथि जे विरहिणी गोपी सभक नोर सँ तमाम ब्रज मे बाढ़ि आबि गेलैक। ओकरा सभक आँखि सँ जखन झर-झर झर-झर क' कए वर्षा होमै लगलैक तखन भगवान कें गोवर्द्धन पहाड़ क छाता तानै पड़ल छलन्हि। अपस्यांत भ' गेल हेताह। बुझलियैक ?

रमेश— :जाय दियह ई सब !

मोहन—खबरदार, फेर जौं प्रेम क नाम लेल ! एही प्रेम क कारणें त माया कें कालेज छोड़ै पड़लन्हि ?

रमेश—एँ ! प्रेमक कारणें ? केकरा सँ प्रेम भ' गेल छलन्हि जे हुनका कालेज छोड़ै पड़लन्हि ?

मोहन—प्रेम हेतिहन्हि तखन फाँसिये पर लटका देतिहथिन्ह पीसा। ओ त 'प्रेम' पर लिखैत-पढ़ैत छलीह।

रमेश—से की ?

मोहन—औ; एक दिन कालेज मे प्रोफेसर कहलकन्हि जे 'प्रेम' पर लेख लिखि कए आनू। बस, पीसा कें मालूम भ' गेलन्हि जे आजकल कालेज मे प्रेम क पढ़ाइ होइत छैक। कि चट द' कालेज छोड़ा देलथिन्ह।

रमेश—त कतय ? आइ अहाँक बहिन कें नहि देखि रहल छियन्हि ?

मोहन—हैती कतहु ! एही आसपास चक्कर काटै हैती। मुदा ई त कहू जे एहि दुइये दिन क परिचय मे अहाँ हुनका अपन भक्त

कोना बना लेलियन्हि ?

रमेश—भक्त कियैक हैती हमर ? लेकिन हँ; हमहूँ एहन दिव्य कन्या आइ धरि......

मोहन—नहि देखने छलहुँ। सैह ने ?

रमेश—सैह ! ठीक कहल।

मोहन—दिव्य त ओ ठीके छथि। आइ धरि हुनका तामस नहि देखल—सदा हँसमुख। बुझल रमेश बाबू, हमर पीसी कें इयैह माया एक मात्र सन्तान, किन्तु ओ हमरा नेनपनहि सँ बेटे जकाँ राखलन्हि। हम दुनू भाइ-बहिन संगे-संग हँसैत-खेलाइत पैघ भेलहुँ। पीसी क मुइला क उपरान्त हमर मन टूटि गेल आ' हम मधुबनी छोड़ि पटना कालेज मे नाम लिखा लेलहुँ।

रमेश—त सब छुट्टी मे अहाँ एतय नहि आवैत छी ?

मोहन—ई त बुझू जे माया क सिनेहें हम साल-छौ मास पर आबि जाइत छी—सेहो बेसी कए नुकाएले-चोराएले। असल मे पीसा कें हम आब सोहाइतो नहि छियन्हि आ' ने ओ हमरा सोहाबैत छथि।

रमेश—से कियैक ?

मोहन—हुनका डर होइत छन्हि जे हमरा किछु देमै नहि पड़न्हि। हुनका प्राणहुँ सँ बेसी प्रिय छन्हि अपन सम्पत्ति। ओ बेटी क बियाह नहि करैत छथि जे आन क्यो ने हुनक धनक मालिक बनि बैसय। कोनो मूर्ख-चपाट कें घर-जमैया बना

कए रखबाक फेर मे छथि। सद्‌ति काल बेटी कें उपदेश दैत रहैत छथिन्ह जे प्रेम जुनि करी, एहि सँ बढ़ि कए आन कोनो रोगे नहि।

रमेश—बेचारी माया ! एकरहि कहैत छैक कीच मे कमल।

मोहन—बेचारी दिन-राति भारी अवग्रह मे पड़ल रहैत अछि। पीसा त तेहन कंजूसाधिराज छथि जे हुनकर मुहो देखने...

[तावत् दूर नेपथ्य सँ कर्कश स्वर मे पंडित फुचाइ झा क गरजब सुनल जाइछ।]

फुचाइ झा—धर, धर ! हे गे छिछियैली, ई कि डकेती छियैक ? कहह, दुआरि पर सँ सब टा लिद्दी हँसोतने जा रहल अछि। हे गे, हम घूर कथी ल' कए लगाएब गे ?

रमेश—ई गरजि के रहल अछि ?

मोहन—अरे वैह चंडाल-चौकड़ी—हमर पीसा ! और के एहन गरजत ? मुदा ई पूर्णिया सँ आइये कोना आबि गेलाह ? माया त लिखने छल जे पन्द्रह दिनक लेल ओ मसियौतक ओहिठाम पूर्णिया गेल छथि आ' एतय देखैत छियैक जे ई सद्यः...... !

फुचाइ झा—[पुनः नेपथ्य सँ फुचाइ झा क गरजब सुनल जाइछ] हे गे, हे गे, फेर भागलें कि ?

[मोहन घबड़ैबाक नाट्य करैछ।]

रमेश—त अहाँ हुनका सँ एतेक घबड़ा कियैक रहल छी ?

मोहन—[व्यग्रता-पूर्वक] अरे, काल छियैक, काल! माया लग अहाँ कें देखने चट द' कए [दुनू हाथें रमेश क नरेटी टिपबाक अभिनय करैत] इयैह टिप देताह।

रमेश—[भयभीत होइत] आँय? [एम्हर-ओम्हर देखैत] तखन......?

मोहन—तखन की? अहाँ एही ठाम रहू। हम हुनका ओम्हरहि सँभारि रहल छियन्हि। आ' हे, हुनका सोझाँ किन्नहु नहि आयब; हँ। हमरा लोकनिकें आइये पड़ाबै पड़त।

[मोहन क प्रस्थान। माया एम्हर-ओम्हर हुलकि-बुलकि कए सशंक जकाँ प्रवेश करैत अछि। बामा हाथ मे एकटा छिपली मे उसनल सौंसे अंडा और दहिना हाथ मे कटोरी मे चाह छन्हि। दुनू परस्पर सप्रेम देखैत छथि।]

माया—अहाँ कालिह बजैत छलहुँ जे पटना मे अहाँ प्रतिदिन अंडा खाइत छी आ' चाह क बिना माथ दुखबै लगैत अछि। तें कतेको मोसकिल सँ हम आइ ई मँगाओल।

रमेश—हमरा लेल एतेक कष्ट कियैक?

माया—एहि मे कष्ट की? अहाँ क कोन सेवा जोकर हमरा लोकनि छी?

फुचाइ झा—[तावत् नेपथ्ये मे दूरहि सँ फुचाइ झा क ऐबाक आहट भेंटि रहल अछि। बेटी कें स्नेह-सिक्त स्वर मे हाँक द' रहल छथि] माया, माया छें गे?

[एम्हर रमेश और माया क मुहँ पर अत्यन्त घबड़ाहट क नाट्य। अस्तव्यस्तता। माया क इशारा सँ रमेश चौकी तर नुका रहैत अछि। चौकी पर राखल अंडा कें देखि माया क विकलता। ओ चट द' ओकरा उठा कए अपन मुख मे राखि लैत अछि।]

माया—[पिता कें आयल देखि पैर छूबि कए प्रणाम करैत अछि।]

फुचाइ झा—[आशीर्वाद दैत] बेटी, एना उदास कियैक छें ?

माया—[मुह मे सौंस अंडा रहबाक कारणें चुप रहि विकलता क नाट्य क' रहल अछि।]

फुचाइ झा—पूर्णिया मे त बुझें जे हम औनाबै लागलहुँ। भला, कहू त, हमर मौसियौत स्वयं अंडा खाइत छथि। नारायण-नारायण ! मुर्गा-मुर्गी, काछु-माछ, भक्ष्य-अभक्ष्य कोनो वस्तु हुनका सब सँ अबंच नहि छन्हि। बारहो वर्ण क पानि पिबैत छथि ओ लोकनि। नारायण-नारायण ! घोर कलियुग आबि गेल अछि। कोना कए आब जाति-धर्म बाँचत से नहि बुझाइछ ! नारायण-नारायण !

माया—[चिन्तित मुख-मुद्रा द्वारा खेद सूचित करैत अछि तथा हुनका लोकनिक अनाचार क भर्त्सना करैत जकाँ मुहँ बिचकाबैत अछि।]

फुचाइ झा—आ' हुनक बेटा एक किस्तनियाँ छौंड़ी क प्रेम मे फँसि कए फड़फड़ा रहल छन्हि। ई कौलेजियो सब विचित्रे

परिपाटी ध' रहल अछि। कतय स एकरा सब कें एहि महामारी क लसेंग ध' लैत छैक, से नहि जानि! नारायण-नारायण!

माया—[कौलेजिया नामधारी घृणित प्राणी सभक प्रति खिन्नता प्रकट करैत मुहँ बन्दे कैने] हूँ-हूँ, हूँ-हूँ! [जेना बाप कें वारण क' रहल होथि जे ओहि पापी सभक चर्चो धरि अनुचित।]

फुचाइ झा—[अपन घर क खिड़की सब खुलल देखि] घर क ई खिड़की सब कियैक खुलल छौक? हे, ई सब खोलि कए नहि राखी। अहू बाटें लसेंग आबि सकैछ। सड़क परक मकान। के कहलक अछि? नारायण-नारायण! आ' ई कालेजो मधुबनी मे की खुजि गेल जे प्राण सदति अवग्रहे मे रहैत अछि।

माया—[हाथ हिला-हिला कए ई बुझैबाक चेष्टा क' रहल अछि जे आब भविष्य मे खिड़की कहियो फुजल नहि रहतैक।]

फुचाइ झा—हे, तों एहि प्रेम-त्रेमक चक्कर मे नहि पड़िहें। एखनि तोहर बयसे की भेल छौक? [कंठ कें अवरुद्ध जकाँ करैत] आ' जौं तों चलि गेलें त हमर बाँचबे असम्भव! [बियाहक नामे माया लाजें मुँह कनेक झाँपि लैत अछि।] बुझलें, हमर बाँचबे असम्भव! [हठात् अधिक भावावेश मे आबि जाइत छथि।] आइ ब्राह्मणी क रहने......! नारायण-नारायण!

माया—[माइ क स्मरण सँ कपसि-कपसि कए कानैछ।]

फुचाइ झा—तहूँ कानैत छें गे ? हँ; माय-बाप क ममता हेतैक छैक तेहने ! नारायण-नारायण !

[तावत् हुनक दृष्टि कटोरी मे राखल चाह पर पड़ि जाइत छन्हि आ' ओ लगलहि गरजि उठैत छथि।]

एँ ! आ' ई की थीक ? उठा कए देखैत आ' कनेक सुंघैत छथि। सुंघितहि नाक-भौं सिकोड़ि लैत छथि।] नारायण-नारायण ! ई चाह ! चाह हमरा ओहिठाम कतय सँ आयल ? त तों की चाहो पीबै लागलें ?

माया—[अस्वीकारात्मक रूपें हाथ हिला-हिला कए आ' मुहँ बन्द कैने] उहुँ- उहुँ।

फुचाइ झा—[हाथ चमका कए] एना-एना की ? साफ बाज ने ? मुहँ मे की मुंगबा छौक ? नारायण-नारायण !

माया—[अति दीनता एवं व्याकुलता क नाट्य करैत सक्क-पक्क क' रहल अछि।]

फुचाइ झा—[स्वर कनेक कठोर करत] त बकार कियैक ने निकलैत छौक ? भ' की गेल छौक तोरा ? बौक जकाँ कियैक क' रहल छें ? नारायण-नारायण !

माया—[आन दिसि घूमि कए, अनेरो नाक सुरैक कए ई देखै-बाक प्रयास क' रहल अछि जे ओकरा सर्दी भ' गेल छैक।]

फुचाइ झा—सर्दी भेल छौक ? त तुलसी क कड़हा कियैक ने

पीलें ? एहि चाह-फाह सँ की हैतौक ? बेकार पैसो क खर्च।

माया—[अँगुरी सँ कंठ दिसि देखा कए और छाती दिसि देखा कए बता रहल अछि जे गर बाझि गेल अछि आ' कफो भ' गेल अछि।]

फुचाइ झा—त गरा मे की बेंग फँसि गेल छौक ? बाजै ने छ कियैक ? मुहँ खोल त; देखियौक, की भेल छौक गर मे ? नारायण नारायण !

माया—[हाथ-मुहँ हिला हिला कए "किछु नहि; किछु नहि" कहबाक इंगित कए विकलता क नाट्य क' रहल अछि।] उहुँ - उहुँ।

फुचाइ झा—ओफ ! आइ त हमरा सब किछु बिलक्षणें बुझाइत अछि। एमहर चाह राखल अछि आ' ओमहर ई बौक बनल हाथ-मुहँ चमका रहल अछि। नारायण-नारायण !

माया—[मुहँ बन्द केनहि ठुनकि रहल अछि] हुँ, हुँ, हुँ, हुँ !

फुचाइ झा—[बेटी क कानब सुनि फुचाइ झा द्रवित भ' जाइत छथि आ' सान्त्वना-पूर्ण स्वर मे बाजैत छथि] हे, सुन, कानी जुनि। तों कथी लेल कानबें ? तों त जानितहि छें जे सब सम्पत्ति पंडिताइन क नामे छलन्हि आ' मरबा सँ पूर्व ओ सब किछु तोरे नामे रजिस्टरी क' गेल छथुन्ह। तैं तोरा कथीक परबाहि ? हँ, हमरा चिन्ता होमय त स्वाभाविको। तोहर बियाह हैबाक साथे हम बेटी त गमैबे करब आ' संगहि सब धनो-दौलत गमा देब।

माया—[ठुनकब फेर आरम्भ भ' जाइत छन्हि] हुँ-हुँ, हुँ-हुँ।

फुचाइ झा—कनेक एहि बूढ़ बापो क अवस्था दिसि देख !

संघ क कार्यकर्त्ता लोकनि—[तखनहि एकहि संग दू आदमी नेपथ्य सँ शोर पारैत छथि] पंडित जी छी औ ? औ पंडित जी !

फुचाइ झा—[माया कें] जो; तों कनेक ओमहर जो त।

[शोर पारनिहार क दिसि कनेक साकांक्ष होइत छथि। तखनहि माया कें जान बचैबाक अवसर भेंटैत छैक आ' ओ लगलहि पड़ा जाइत अछि।]

संघ क कार्यकर्त्ता—[पुनः उच्चतर स्वर मे] पंडित जी, औ पंडित जी !

फुचाइ झा—[अनुच्च स्वरें] धुर मरदे ! [उच्च स्वरें] अहाँ सब दुआरि पर बैसैत जाउ। हमर बकरी खुजि गेल अछि। लगलहि बान्हने आबि रहल छी।

[फुचाइ झा निष्क्रमणक लेल उद्यत होइत छथि कि तखनहि मंच पर अन्हार भ' जाइत अछि।]

———

द्वितीय दृश्य

[स्थान—पंडित फुचाइ झा क दलान। दरबज्जा पर एक चौंकी, तीन कुर्सी और एक टा टूल राखल अछि। चौंकी

पर मैल सन सतरंजी ओछाओल छैक। तीन गोटे व्यग्रता-पूर्वक फुचाइ झा क प्रतीक्षा क' रहल छथि। स्पष्ट बुझना जाइछ जेना मिथिला संघ क नेता लोकनि होथि। एक गोटे क हाथ मे चन्दा क रसीद बही सेहो छन्हि।]

प्रथम कार्यकर्त्ता—[खौंझा कए] औ पंडित जी ! पंडित जी...!

फुचाइ झा—[नेपथ्यहि सँ] के छी औ ? आबि त रहल छी।

[कहैत-कहैत फुचाइ झा प्रवेश करैत छथि और तीक्ष्ण दृष्टि सँ तीनो कार्यकर्त्ता कें निहारि लैत छथि।]

तीनो कार्यकर्त्ता—[एकहि संग] प्रणाम पंडित जी ! प्रणाम पंडित जी !

फुचाइ झा—[सशंक स्वरें धीरे-धीरे हाथ उठा कए आशीर्वाद दैत-दैत जेना प्रणाम करबाक चेष्टा क' रहल होथि।] आउ, आयल जाउ।

तीनो कार्यकर्त्ता—हें-हें-हें-हें, हें-हें-हें हें ! बड़ भाग्यें अपने क दर्शन भेलैक आइ !

फुचाइ झा—अपने लोकनि कें चिन्हल नहि ?

एक व्यक्ति—हमरा लोकनि मिथिला संघ क दड़िभंगा शाखा क कार्यकर्त्ता थिकहुँ।

फुचाइ झा—त बेश ! हमरा सँ कोन काज अछि ?

प्रथम कार्यकर्त्ता—अपने सनक धर्मात्मा क दर्शन दुर्लभ होइत छैक। हमरा लोकनि केवल दर्शनार्थ आयल छी।

फुचाइ झा—हम त ने कोनो यज्ञ कराओल, ने पोखरि-इनार

खुन्हाओल आ'ने कहियो सत्यनारायणो क पूजा धरि कराओल, तखन हमर कहिया सँ धर्मात्मा मे गिनती होमै लागल ? नारायण-नारायण।

प्रथम कार्यकर्त्ता—किन्तु अपने जकाँ नियम-निष्ठा सँ सन्ध्यो-वन्दन करैवला कै गोट लोग भेंटताह आइ काल्हि ?

फुचाइ झा—हँ; से जे कही ! त बेश। दर्शन त भ' गेल ने ?

प्रथम कार्यकर्त्ता—बात ई छैक जे अपने हमरा लोकनि क अधि-वेशन मे पदार्पण करी, इयैह अनुरोध करबा लेल हमरा लोकनि आयल छी।

फुचाइ झा—बेस त अपने लोकनि हँकार देबै आयल छी ? त सोझा क' कए से ने बाजू।

दोसर कार्यकर्त्ता—आ' संगे-संग ईहो अनुरोध करबा क छल जे हमरा लोकनि कें एहि बेर एकटा प्रतिनिधि मण्डल दिल्ली पठेबा क अछि।

फुचाइ झा—बेस, त पठाउ गें।

प्रथम कार्यकर्त्ता—किन्तु ताहि लेल हमरा लोकनि कें टाका लागत।

फुचाइ झा—हँ; त बिना टाका लगौने दिल्ली कोना जायब ?

दोसर कार्यकर्त्ता—तैं एहि पवित्र कार्य मे अपनहुँ कें किछु सहायता करबा क चाही।

फुचाइ झा—[सहायता क नामहि सँ जेना चौंकि जाइत छथि।] सहायता ? पवित्र कार्य मे ? कोन पवित्र कार्य करै जाइत

छी अहाँ लोकनि ?

प्रथम कार्यकर्त्ता—इयैह मा मैथिली क उद्धार। मिथिला मे आ' संसार भरि मे मैथिली भाषाक उचित आदर हो, सैह कार्य।

फुचाइ झा—ई कोन पवित्र कार्य भेल ? देववाणी संस्कृत क रक्षा क चेष्टा करितहुँ त एकटा बातो। नारायण-नारायण !

प्रथम कार्यकर्त्ता—संस्कृत क रक्षा क चेष्टा त समस्त देश क नेता लोकनि करताह।

फुचाइ झा—नेता लोकनि अलहुआ करताह। घर-घर मे अंग्रेजी फैल गेल; लोग सब क्रिस्तान भ' गेल आ' अहाँ सब खाली चन्दे उगाहने घुरू।

दोसर कार्यकर्त्ता—से त एहि लेल भ' गेल जे हमरा लोकनि मातृ-भाषा मैथिली कें भूलि रहल छी।

फुचाइ झा—फेर वैह मैथिली। औ बाबू, मैथिली मे अहाँ क एकोटा मन्त्र अछि ? की सन्ध्या-वन्दन आ' श्राद्धो-तर्पण मैथिलीये मे करब ? बेमतलब बात सब ! नारायण-नारायण !

प्रथम कार्यकर्त्ता—जे जाति अपन अधिकार क रक्षा नहि क' सकैछ तकर धर्म-कर्म, जाति-पाँति, नियम-निष्ठा, आशा-आकांक्षा, लोक-परलोक सब भ्रष्ट भ' जाइत छैक। हम सब मैथिली क बिना शिक्षा, राजनीति, अर्थनीति कथू मे आगाँ नहि बढ़ि सकैत छी। बंगाल, गुजरात आ' पंजाब कें देखियौक, कोना जागि गेल अछि।

फुचाइ झा—भेल-भेल। जतबे शिक्षा फैलल ततबे मे त त्राहि-

त्राहि मचि गेल; आब शिक्षा कें और आगाँ बढ़ा कए की करब?

प्रथम कार्यकर्त्ता—एकरा शिक्षा फैलब कियैक कहल जाइत छैक, ई त अशिक्षा क फैलब भेल। शिक्षा फैलने त मातृ-भाषा, मातृभूमि, धर्म, मर्यादा और चरित्र क प्रति आस्था फैलतिहैक। ई सब त अँग्रेजी क प्रभावें भ' रहल अछि। तैं मैथिली क उद्धार परम आवश्यक।

फुचाइ झा—त मैथिली क प्रचार सँ लोग कें कर्त्तव्याकर्त्तव्य क ज्ञान भ' जेतन्हि?

प्रथम कार्यकर्त्ता—निश्चय। मातृभाषा क माध्यमे प्रत्येक वस्तु क ज्ञान बेसी शीघ्रता सँ आ' नीक जकाँ होइत छैक।

फुचाइ झा—अच्छा।

प्रथम कार्यकर्त्ता—आ' मैथिलीये क माध्यमे हमरा लोकनि प्राचीन गौरव कें स्मरण करैत स्वर्णमय भविष्य क निर्माण करब।

फुचाइ झा—बेश-बेश! तखन त बड़ दिव्य कार्य क' रहल छी! करै जाउ।

दोसर कार्यकर्त्ता—लेकिन ताहि लेल त सब कें त्याग करै पड़तन्हि। सब कें किछु-किछु सहायता देबै पड़तन्हि।

फुचाइ झा—[साहाय्य देबा क नाम सुनितहि झमान भ' जाइत छथि।] बेश त हमरा की कहैत छी? हम जायब अहाँ क सभा मे हँकार पुरक लेल। भेल?

दोसर कार्यकर्त्ता—से त भेल, लेकिन चन्दा ?

फुचाइ झा—देखू बाबू लोकनि, चन्दा-फन्दा क फेर मे हम नहि पड़ब। और जे कही !

दोसर कार्यकर्त्ता—और कहिये की सकैत छी ? मिथिला संघ क कार्यकर्त्ता लोकनि आन्दोलन करताह, गिरफ्तार हेताह, ताहि मे अहाँ नहिये जायब आ' चन्दा देबे ने करबै! तखन धर्म क रक्षे क चिन्ता कियैक करैत छी ?

फुचाइ झा—नारायण-नारायण !

प्रथम कार्यकर्त्ता—बात ई छैक जे दस क लाठी, एक क बोझ। थोड़बे-थोड़बे जँ सब त्याग करथि त मिथिला क उन्नति मे कतेक देर लगतैक ?

फुचाइ झा—देखैत छी जे अहाँ लोकनि किन्नहुँ नहि मानब। नारायण-नारायण! अच्छा! [डाँड़ सँ एकटा खूँट निकालि, तकर पोटरी खोलैत छथि। ताहि मे कागज मे लपटल एक अठन्नी छन्हि। से बाहर करैत छथि आ' वेह बढ़ा दैत छथिन्ह चन्दा क लेल।] हे लियह !

दोसर कार्यकर्त्ता—[अठन्नी उनटा-पुनटा कए देखि] ई त एकदम खराब अछि; साफे रांग थीक।

फुचाइ झा—आब रांग हो वा सोना। अहाँ क भाग्यें जे निकलि गेल से लेब त लियह, नहि त हमर पिण्ड छोड़ि देल जाउ। नारायण-नारायण !

दोसर कार्यकर्त्ता—बेस, त इहो अपनहि राखल जाउ। कहियो

बेर पर काज देत। [अठन्नी फिरा दैत छथि।]

फुचाइ झा—[तमकि कए अठन्नी वापस लैत] अच्छा त दियह। बेर पर त ई काज देबे करत। एहने-एहने कतेको नोचै-झपटैवला लोग सब आबैत रहैत छथि। नारायण-नारायण!

प्रथम कार्यकर्त्ता—किन्तु ई बुझि लियह जे हमरा लोकनि कहियो हताश होमैवला नहि छी। फेर आयब......।

फुचाइ झा—[तमतमाएल] बेश, आयब ! नारायण-नारायण ! [कार्यकर्त्ता लोकनि "जय मैथिली ! जय मैथिली !!" कहैत-कहैत चलि जाइत छथि। पण्डितजी सब कें हाथ जोड़ि कए विदा करैत छथि। आन दिसि सँ माया क प्रवेश। फुचाइ झा एखनि धरि बड़बड़ा रहल छथि।] ईह ! पर क धन बटोरि कए मातृ-भाषा क उद्धार करताह। सैह अछि त बेचि बिकिन लियह ने अपन जमीन-जगह आ' लगा दियौक गे। होमि दियह अपना कें। बुड़ि जाउ, दरिद्र भ' जाउ, मिटि जाउ आ' तखन करू गे मातृभूमि क रक्षा ! के रोकै जाइत अछि ? नारायण-नारायण !

माया—[समीप आबि कए] से त ओ महापुरुष लोकनि करिते छथि। आब जगज्जननी सीताजी क भाषा कें के रोकि सकैत छैक ? सुनै नहि छियैक हुनका लोकनिक गान—

बाजि गेल रण - डंक !

फुचाइ झा—एँ ! त तहूँ......?

माया—हम हीं टा की ? मिथिलाक सब नारी जागि गेल अछि। आब ओकरा के रोकि सकैत अछि ?

फुचाइ झा—[मुहँ विकृत करैत] बड़ टभ-टभ करैत छें तों ! नारायण-नारायण !

माया—जाउ, जल्दी स्नान क' कए भोजन क' लियह। रास्ता चलि कए आयल छी।

फुचाइ झा—अरे हम स्नान की करब कप्पार। देखै नहि छहीं [अँगुरी सँ दूर दिसि इंगित करैत] हे वैह खेत मे ककरो बकरी चरि रहल अछि। पहिने ओकरा हाँकि त ली। [जोर सँ] हे-हे, हे-हे ! लगा त.........

[फुचाइ झा गरजैत-गरजैत निकलि जाइत छथि। तखनहि मंच पर अन्हार पसरि जाइछ।]

———

तृतीय दृश्य

[स्थान—माया क प्रकोष्ठ। मद्धिम प्रकाश भ' रहल अछि। प्रकाश-रेखा माया क ऊपर पड़ि रहल छैक। माया कनेक पैघ दर्पण क सम्मुख बैसि कए मन्द स्वरें विद्यापति क गीत गाबि रहल अछि। तखनहि पाछाँ सँ रमेश चुपचाप प्रवेश करैत छथि आ' ठाढ़ भ' कए गीत सुनै लगैत छथि।]

गीत

अवनत आनन' कए हम रहलिहुँ
बारल लोचन चोर।
पिया-मुख-रुचि पिबए धाओल
जनि से चाँद चकोर॥
ततहु सयँ हठ हटि मो आनल
धएल चरन न राखि।
मधुप मातल उड़ए न पारए
तइअओ पसारए पाँखि॥

रमेश—[गीत समाप्त होइतहि उच्छ्वसित कंठें] वाह! बड़ सुन्दर लागल!

माया—आँय! अहाँ एखन?

रमेश—हँ माया देवी, हमरा सब कें त अकस्मात् पड़ाबे पड़ि रहल अछि। त सोचलहुँ जे खतरो उठा कए एक बेर अहाँ क दर्शन क' ली! फेर कहिया नदी-नाव संयोग!

माया—तखन अहाँ सब कि आइये चलि जायब?

रमेश—उपाय की? अहाँ सन सुन्दरी और गुणवती क समीप रहबा क लेल भाग्यो त चाही?

माया—हम कोन जोकर छी—अहाँ क सामने? किन्तु एतबहि देर मे हमरा लगैछ जे सब किछु पावि गेलहुँ आ........

[हठात् कंठ अवरुद्ध भ' गेलाक कारणें चुप भ' जाइछ।]

रमेश—[गद्-गद् स्वरें] हमरो जीवन धन्य भ' गेल। जिनगी भरि हमरा यादि रहत.........!

[दुनू एक दोसरा कें सप्रेम दृष्टियें देखि रहल छथि कि तखनहि नेपथ्य सँ फुचाइ झा क स्वर सुनना जाइछ।]

फुचाइ झा—माया, धोती दीहें गे। स्नान क' आबी।

[माया और रमेश घबड़ा रहल छथि। माया रमेश कें चौंकी तर नुका रहबाक इंगित करैत अछि। रमेश चारू कात देखि कए कातर जकाँ चट द' चौंकी तर जा कए नुका रहैत छथि। तखनहि फुचाइ झा प्रवेश करैत छथि।]

माया—[धोती ल' कए फुचाइ झा कें दैत] जाउ, जल्दी स्नान क' आउ पोखरि दिसि सँ। बहुत अबेर भ' गेल अछि।

फुचाइ झा—बेश, बेश।

[धोती ल' कए प्रस्थान करैत छथि। हुनका गेल बुझि रमेश चौंकी तर सँ कछुआ जकाँ कनेक मूड़ी निकालैत छथि। तावत् फुचाइ झा किछु सोचि, पुनः लौटि अबैत छथि।]

जा, तौलिया त भुलिये गेलियैक !

[माया तौलिया दैत छन्हि, जेकरा कान्ह पर राखि कए ओ चलि जाइत छथि। रमेश पुनः किछु बेसी मूड़ी निकालैत छथि कि तावत फेर पण्डितजी "माया, माया" कहैत आबि जाइत छथि।] हे ये ले, तेल त देबे ने कैलें।

[माया किछु खौंझाइत जकाँ तेल दैत छन्हि आ' ओ माथ

मे रगड़ैत-रगड़ैत चलि जाइत छथि। रमेश पुनः दू एक बेर हुलैक-बुलैक कए निकलि अबैत अछि।]

रमेश—ह-ह; आब जा कए उद्धार भेल अछि। एह! बाप रे-बाप

माया—अहाँ क उद्धार त भ' गेल, मुदा और लोकक कोना हैतैक से कखनहुँ सोचलियैक अछि ?

रमेश—हँ दाइ, अहाँक उद्धार एहि नरक सँ अवश्यहि हैबाक चाही।

माया—किन्तु तकरा लेल त.........

रमेश—त्याग करै पड़त, होमि दियै पड़त अपना कें। सेह ने हम सब किछु क' सकैत छी अहाँ क लेल।

[रमेश भावावेश मे आगाँ बढ़ि, माया क हाथ पकड़ि लै छथि कि तखनहि धड़फड़ाएल जकाँ मोहन क प्रवेश।]

मोहन—[एहन दृश्य देखि दाँत तर जी दाबि लैत अछि तथ दुनू तर्जनी सँ चट दए कान मूनि आ' आँखि बन्द क' लै अछि।] हम किछु नहि सुनलहुँ, किछु नहि देखलहुँ, कि नहि देखलहुँ, किछू नहि सुनलहुँ। किछु नहि, किछु नहि किछु नहि।

[अतीव गम्भीर वातावरण]

रमेश—मोहन बाबू !

मोहन—की ?

माया—भैया !

मोहन—की ?

रमेश—मोहन बाबू !

मोहन—[जोर सँ] की......?

माया—भैया, आब सब लाज अहीं क हाथ।

मोहन—[कृत्रिम कठोरता-पूर्ण स्वर मे माया कें आदेश दैत] एमहर आउ।

[माया मोहन दिसि अबैछ। मोहन ओकरा कनेक अलग ल' जा कए कान मे किछु फुसफुसा कए कहैत छथिन्ह आ' ओ लज्जा तथा प्रसन्नता सँ सिर हिला कए स्वीकृति प्रदान करैत अछि।]

रमेश—मोहन बाबू !

मोहन—[तहिना कठोर स्वरें] एमहर आउ।

[रमेश सेहो मोहन लग अबैत छथि। मोहन हुनको कनेक फराक ल' जा कए कान मे किछु कहैत छथिन्ह। पुनः ओहो हिनक कान मे किछु कहैत छथिन्ह। दुनू प्रसन्न प्रतीत होइत छथि।]

रमेश—किन्तु एहि मे खतरो छैक।

मोहन—से अहाँ लोकनि हमरा पर छोड़ि दियह। [माया दिसि देखैत] अहाँ कें त साहस अछि ?

माया—[विहुँसैत] देखक चाही। की-की करै पड़तैक ?

मोहन—अरे एहि मे की छैक ? कखनहु पेट पकड़ि कए इस्स-इस्स कैनाइ, कखनहु माथ पकड़ि कए आहि-ओहि कैनाइ, कखनहु ही-ही-ही-ही क' कए हँसनाइ, कखनहु ठहाका मारनाइ, कखनहु काननाइ, कखनहु आँखि गुड़ारनाइ, कखनहु दाँत किचकिचौनाइ ! बस !

माया—बेस ; चेष्टा करब !

[तखनहि मंच पर अन्हार भ' जाइत अछि ।]

यबनिका-पतन

———

द्वितीय अंक

प्रथम दृश्य

[स्थान पूर्ववत् भीतरक प्रकोष्ठ] प्रकाश भेला क संगहि देखना जाइछ जे माया माथ ध' कए बैसल अछि। तखनहि नेपथ्य सँ फुचाइ झा क स्वर सुनना जाइछ।]

फुचाइ झा—[नेपथ्य सँ] माया, माया छें गे ? [कहैत-कहैत प्रवेश करैत छथि] माया !

माया—[बैसले] ओ...ह !

फुचाइ झा—एना माथ कियैक पकड़ने छें ? किछु भेल छौक की ?

माया—एखनहि बड़ जोर सँ दर्द होमै लागल।

मोहन—[प्रवेश करैत] अरे, माथ क दर्द त हमरा एहिना दिन मे चारि बेर कए होइत अछि। शीतल जल ल' कए धो लैत छी; बस, ठीक भ' जाइत अछि।

माया—अरे, बाप-रे-बाप !

फुचाइ झा—की भेलौक गे ?

माया—पेटो मे दर्द होमै लागल।

फुचाइ झा—अच्छा, त लेट जो।

माया—[माया उठि कए चलबाक उपक्रम करैछ, किन्तु पैर लड़खड़ा

जाइत छैक। एक दिसि मोहन आ' दोसर दिसि पण्डितजी डेन पकड़ि कए सँभारि दैत छथिन्ह त कोनो प्रकारें चौंकी धरि पहुँचि कए औंघड़ा जाइत अछि।] बाप-रे-बाप! आब त छातियो मे दर्द होमै लागल। गत्तर-गत्तर टूटल जाइत अछि!

फुचाइ झा—ऐं! ई की भेलौक गे?

माया—माइ गे, माइ। आब नै बचबौ गे माइ। [दाँती लगबा क अभिनय करैछ।]

मोहन—ई की? ई त दाँती लागि गेलैक! [रेघा कए] औ पीसा, औ पीसा, ई त दाँती लागि गेलैक औ! हम ता' दाँती छोड़बैत छियैक। अहाँ डाक्टर क लेल ककरो पठाबियौक। [माया क मुहँ पर पानि क छींटा दैत छथि।]

फुचाइ झा—हम एखनहि पठा रहल छियैक [प्रस्थान]।

माया—[किछु क्षण क उपरान्त आँखि खोलि लैत अछि। छटपटी बन्द छैक। दीर्घ उच्छ्वास लैत क्षीण स्वर मे बजैत अछि] बाप रे!

मोहन—हे घबड़ाउ जुनि। धैर्य आ' साहस सँ काज लियह।

फुचाइ झा—[प्रवेश करैत] कविराज कें बजा पठौने छियैक।

माया—बाबू औ!

फुचाइ झा—[लग जा कए कनमुहँ जकाँ] बेटी, घबड़ाबें जुनि; साहस सँ काज ले।

माया—बाबू औ, हमर कहल-सुनल सब माफ क' देब। आब

हम चललहुँ।

फुचाइ झा—मोहन, सुनैत छह ? हमर त चित्त हलदल क' रहल अछि !

मोहन—अहाँ त पठौने छियैक एके जगह। आ' जौं कविराज जी घर पर नहि होथि ?

फुचाइ झा—हँ हौ, ठीके कहलह। एकरे कहैत छैक पढ़ुआ। अच्छा, त डाक्टर कुन्दू कें सेहो बजा पठबैत छियैक। होमियोपैथी मे हुनका नीक यश भेंटल छन्हि।

मोहन—बड़का डाक्टर चटर्जी बाबू जे छथिन्ह हुनको बजा लियन्हु ने। जीवन-मरण क सवाल छियैक।

फुचाइ झा—[असहाय जकाँ अनिच्छा-पूर्वक] अच्छा; हुनको बजा लैत छियन्हि।

[चिन्तातुर फुचाइ झा प्रस्थान करैत छथि कि तखनहि मंच पर अन्हार पसरि जाइछ।]

द्वितीय दृश्य

[कविराज क प्रवेश। कविराज क मुहँ बूढ़ जकाँ चुटकल छन्हि। पुरान जमाना क कपड़ा पहिरने, मैल किरकिट एकटा चादरि गर्दनि पर लपेटने, अपना कें बेसी महत्वपूर्ण बुझैत, गम्भीर गति सँ नहुँ-नहुँ चलैत कविराजजी आबि रहल छथि।]

कविराज—की भेल छैक कनकिरबी कें ?

मोहन – से त अहीं ने बुझबैक ?

कविराज—एखनहि ने हम बुझि जाइत छियैक। [रोगी लग जा कए] देखी; हाथ निकालू त दाय।

माया – [दहिना हाथ बढ़ा दैत छैक।]

कविराज—ई नहि; ई नहि; बाम हाथ। नारी कें कहल गेल छैक वामा। तें ओकर बामे हाथ प्रशस्त होइत छैक। स्वयं चरक महाराज.........

माया—ओ......ह !

कविराज—आयुर्वेद पर भरोस राखू। आयुर्वेदयतीति आयुर्वेदः। जे शास्त्र आयुक ज्ञान करा दैछ सैह थीक आयुर्वेद। और ई ज्ञान नाड़िये सँ संभव। नाड़ी क संख्या अछि साढ़े तीन करोड़। ऋषि-मुनि कहि गेल छथि :—

सार्द्धत्रिकोट्यो नाड्यो हि
स्थूलाः सूक्ष्माश्च देहिनाम्।

माया—[तावत् माया दर्द क कारणें तीव्र स्वरें किकिया उठैत अछि।] ई......ह ! बाप रौ !

कविराज—देखू, कनेक चित्त लेटि जाउ त।

[मोहन माया कें सहायता द' कए चित्त लेटा दैत छैक। कविराज पेट क भिन्न-भिन्न स्थान कें अँगुरी सँ मारि ढब-ढब क' कए ठोकैत अछि] जी देखाउ त दाइ। [माया

काली माइ जकाँ जी निकालि दैत छन्हि। फेर कविराजजी आँखि क पलक उघाड़ि-उघाड़ि कए देखैत छथिन्ह आ' किछु देर चुप भ' जाइत छथि। तखनहि फुचाइ झा क प्रवेश।]

माया—बाप रे, बाप!

कविराज—कतय दर्द भ' रहल अछि दाइ?

माया—सौंसे देह।

कविराज—एँ! सौंसे देह? हाथो-गोर मे भ' रहल अछि।

माया—हँ।

कविराज—गिरह-गिरह मे सेहो भ' रहल अछि?

माया—हँ।

कविराज—ई बात थीक। पेट मे तँ नहि ने होइत अछि?

मोहन—ई कहैत छल जे पेट हड़हड़-हड़हड़ क' रहल अछि।

कविराज—माथ मे तँ नहि भ' रहल अछि ने?

माया—हँ औ, माथो मे......।

मोहन—बाजैत छल जे माथ मे चक्कर आबि रहल अछि।

कविराज—छाती मे त नहि ने?

माया—हँ औ, छातियो मे।

मोहन—छाती धड़धड़-धड़धड़, धड़धड़-धड़धड़ क' रहल छन्हि।

कविराज—पँजरो मे दर्द अछि?

माया—सब ठाम।

कविराज—सब ठाम? [किछु सोचैत] ओ......सर्वगात्राणि।

[पुनः नाड़ी देखैत और किछु सोचैत] बुझि गेलहुँ, बुझि गेलहुँ। ई त साफ वायु-विकार थीक। स्वयं चरक महाराज कहने छथि जे :—

सर्वाङ्गकुपिते वाते गात्रस्फुरणभञ्जनम्।
वेदनाभिः परीतश्च स्फुटन्तीवास्य सन्धयः ॥

मोहन—कहैत छलीह जे सौंसे देह सन-सन, सन-सन; बन-बन, बन-बन क' रहल छन्हि।

कविराज—हँ औ; कियैक से बुझलियैक ?

मोहन—[चकित जकाँ] कियैक ?

कविराज—स्वयं शास्त्र क उक्ति अछि जे 'सर्वेषां हि रोगाणां निदानं तु कुपितं मलम्।' कुपित मलेक कारणें ई वायु-विकार भेल छन्हि।

मोहन—अपने त कहलियैक जे बात भेल छैक; फेर कहैत छियैक जे वायु-विकार भेल छक ?

कविराज—औ, से अहाँ की बुझै गेलियैक जे वात और वायु मे की भेद छैक ?

फुचाइ झा—छूटि त जैतैक ने कविराज जी ?

कविराज—छूटि त एकर बाप जैतैक। ई त इयैह थीक। स्वयं चरक महाराज कहने छथि......

माया—[बीचहि मे माया किंकियाइत अछि] बाप रौ बाप ! भाला भोंकि देलक।

कविराज—देखलियैक, ई वायु-वेग क आघात भ' रहल छैक।

स्वयं सुश्रुत महाराज कहने छथि—

वाते मज्जगते पीड़ा न कदाचित् प्रशाम्यति।

फुचाइ झा—[बात काटैत] बाँचि त जाइत ने हमर बेटी ? एकर औषधि त छैक ने ?

कविराज—सब छैक, सब छैक। आयुर्वेद मे की नहि छैक औ ? आइ-काल्हुक डाकदर सब की जानै गेलाह ? धन्वन्तरि त मरल कें जिया दैत छलाह, बूढ़ कें जवान बना दैत छलाह और स्वयं चरक भगवान् कहने छथि जे......

फुचाइ झा—[बात काटैत] त एकर ओषधि क लेल......

कविराज—ओषधि ? हँ, ओषधि त एकर छैक, मुदा बड़ विकट।

फुचाइ झा—से की ?

कविराज—से इयेह जे एकरा लेल चाही गुरीचक टटका सत्त। सेहो केहन गुरीचक ? जे बैर केर गाछ पर लतरल हो आ' लतरैत लतरैत पीपर क ऊपर चढ़ि गेल हो आ' ओहि लत्ती कें पूर्णिमा क मध्य रात्रि मे काटल गेल हो।

फुचाइ झा—से तेहन गुरीच क सत्त अहाँ क ओहि ठाम अछि ?

कविराज—अवश्ये अछि कि ? हमरा ओहि ठाम की नहि अछि ?

मोहन—तँ शीघ्रहि पठा दियौक।

कविराज—हम लगलहि पठा दैत छी। [विचित्र जकाँ डेग भरैत प्रस्थान।]

माया—[कनेक बेसी कछ-मछ क' रहल अछि। खने-खन

करौट बदलैत अछि। फेर उठि कए बेसि जाइत अछि।]
हमरा लेटल नहि जाइत अछि। [माया लगलहि ठाढ़ो भ'
जाइत अछि, जेना बाइयेक झोंका पर सब किछु भ' रहल
हो। किन्तु 'आहि-ओहि' कम नहि भेल छै।]

फुचाइ झा—नारायण-नारायण !

माया—हमरा लेटल नहि जाइत अछि; बैसलो नहि जाइत
अछि। देह मे किदन भोंकि रहल अछि !

[तखनहि करुण संगीत-स्वर सुनाइ पड़ैछ और मंच पर
अन्हार पसरि जाइछ।]

———

तृतीय दृश्य

स्थान—पूर्ववत्। माया 'आहि-ओहि' क' रहल अछि।
तखनहि होमियोपाथी डाक्टर कुन्दू प्रवेश करैत छथि।
डाक्टर पहिरने त छथि कोट-पेंट, सुदा परिधान बुझाइ
पड़ैत छन्हि बड़ गन्दा आ' पुरान। गर मे चोंगा (स्टेथिस-
कोप) झूलि रहल छन्हि। एक हाथ मे घड़ी तथा दोसर
हाथ मे दबाइ क बक्सा झूलि रहल छन्हि। लम्बा-लम्बा
डेग भरने आबि रहल छथि।]

फुचाइ झा—आएल जाउ डाकदर साहेब, आएल जाउ।

डाक्टर कुन्दू—पेशेंट कून हाय ?

मोहन—इयैह दर्द सँ छटपटा रहल अछि, डाक्टर साहब।

कुन्दू—[माया लँग जा कए ओकर नब्ज देखलाक उपरान्त] तुम चार ठो बोड़ी खा लो और घूम जाब।

माया—एह! के एखन बेसन निकालि कए घाठि सानत और बड़ी पकाओत गे ?

कुन्दू—ओइ बोड़ी नेइ, एइ बोड़ी—आच्छा बोड़ी।

मोहन—त अच्छा बड़ी कतय सँ आओत ?

कुन्दू—से हम देता है। [डाक्टरी बक्सा खोलि चारि टा उजरा दाना निकालि कए माया क हाथ मे दैत] एइ जे; एइ आभी खा लो और घुमाओ।

माया—[दाना खाइत साश्चर्य डाक्टर दिसि देखैत] घूमब ? आ......ह! बड़ दरद......

कुन्दू—बोला तो; तुम एकटु घुमाओ। [माया बकर-बकर हुनका ताकि रहल छन्हि।] शुना नेइ ? जरा घुमाओ।

माया—घूमब ?

कुन्दू—हैं, हैं। बोला तो जरा घुमाओ।

माया—आँय ?

कुन्दू—अरे बोला तो। जरा जल्दी घुमाओ ना।

माया—जल्दी ? अच्छा! [माया 'बाप रे, माइ गे' करैत-करैत डाक्टर कुन्दू क चारू दिसि चक्कर काटि कए घूमि रहल अछि।]

कुन्दू—आ रे, आ रे; एइ क्या कोरता हाय ?

माया—घूमै त छी।

कुन्दू—वाह रे, हाम बोलता है जे घूमाओ और तुम चारि दिक् नृत्तो कोरता हाय ? [माया कें डेन पकड़ि कए ओछा-ओन पर बैसा कए] शुओ। [माया लेटि जाइत अछि आ' डाक्टर छाती पर चोंगा लगा-लगा कए देखि रहल छथि। पुनः आँखि, जी आ' कंठ क जाँच करैत छथि। तखन दवाइ बला बक्सा सँ एक बही निकालि आ' कलम खोलि कए बैसि जाइत छथि।]

फुचाइ झा—बड़ व्याकुल छैक डाक्टर साहेब !

कुन्दू—शब दोरुस्त हो जायगा। आच्छा, आउर कोनो ओशुध तो नेइ परा हाय ?

मोहन—नहि। खाली एक कविराज जी देखि गेल छथिन्ह।

कुन्दू—आ रे, कोबिराज क्या कोरेगा ? आजकाल कहाँ हाय कोविराज ? ओ सब मिथ्थुक हाय। आच्छा, हाम केस-हिस्ट्री माँगता हाय। इसको काहाँ-काहाँ दरद हाय ?

मोहन—सब जगह; सौंसे देह मे, लेकिन पेट आ' छाती मे बेसी।

कुन्दू—आच्छा, आउर कोभी दरद होया था ?

फुचाइ झा—नहि त।

कुन्दू—कोनो बड़ो ओसुक कोभी होया था ?

फुचाइ झा—एक बेर शूल भेल छलैक।

कुन्दू—[डाक्टर लिखि लैत छथि] आउर कुछ ?

फुचाइ झा—एक बेर जरो भेल छलैक।

कुन्दू—[ईहो लिखि लैत अछि] आउर कुछ ?

फुचाइ झा—इयैह दू-चारि बेर सर्दी भेल हेतैक।

कुन्दू—[ईहो लिखि लैत अछि] आउर इशका मा को कोभी बड़ो बेमारी होया था ?

फुचाइ झा—ब्राह्मणी कें ? [पत्नीक स्मरण अबितहि आँखि डब-डबा अबैत छन्हि। नोर पोछैत—] हुनका त तेहन ने बिमारी भेलन्हि जे चलिये गेली।

कुन्दू—कून बेमारी होया था ?

फुचाइ झा—से कहाँ पता चललैक ? क्यो कहैक जे डाइन क' देलकन्हि आ' क्यो कहैक जे भूत लागि गेलन्हि। आब भगवाने जानथि जे की भेल छलन्हि।

कुन्दू—आच्छा, इशका बाबा को ?

फुचाई झा—एकर पितामह त हम पेटे मे रही तखनहि मरि गेल छलाह। तैं हमरा बुझल नहि अछि।

कुन्दू—आ रे, पितामह नेई, बाप। बाप को पूछा है।

फुचाइ झा—हमरा कियैक कोनो रोग हैत ? सब दिन एहने निसंठ छी।

कुन्दू—आच्छा, इसका नानी को कोभी पेट खराब होया था ?

फुचाइ झा—ई नहि मालुम।

कुन्दू—आलबात खराब था। हम इशका सिमटाम देख के ओशका बुझ गया। इसका नानी का पेट आलबात खराब

था। होमियोपाथी तो सिमटाम का साइन्स हाय। आच्छा, इशको कून खाबार आच्छा लागता हाय? नोनता ना मिट्ठा।

फुचाइ झा—मीठ।

कुन्दू—बास, बास। क्यिर हो गिया। सिमटाम मिल गिया। [बक्सा खोलि किछु दाना निकालि कए दैत] एइ ठांढा जल के साथ खाने से शब दोरुस्त हो जायगा। [कुन्दू क प्रस्थान। होमियोपाथी दवाइ खेबाक संगहि दर्द और बढ़ि जाइत छन्हि। तखनहि एलोपैथिक डाक्टर अबैत छथि। खूब फीट-फाट छथि, किन्तु बुझना जाइछ जे हड़बड़ी मे छथि। अबितहि चोंगा लगा कए छाती आ' पीठ क जाँच करैत छथि! तखन आँखि, जी और पेट देखैत छथिन्ह। लगलहि बिना किछु पुछनहि एक कागज निकालि कए चट द' पुर्जा—प्रेसक्रिपशन लिखि दैत छथिन्ह।]

डाक्टर—तेल-घी के बनल कोनो चीज नहि खाथि आ' खट्टा, मीठा तथा कड़ू सँ सेहो परहेज राखथि। हे, ई टैबलेट दोकान सँ मँगबा लियह; आध-आध घण्टा पर देबैक। आ' इंजेक्शन मँगबा कए कोनो छोटका डाक्टर वा कम्पाउण्डर सँ दिया देबैक। अच्छा नमस्कार! [डाक्टर धड़फड़ा कए जा रहल छथि।]

मोहन—किन्तु, एकरा भेल की छैक डाक्टर साहब?

डाक्टर—ताहि सँ अहाँ कें कोन काज? जेना कहलहुँ तेना करू

था। होमियोपाथी तो सिमटाम का साइन्स हाय। आच्छा, इशको कून खाबार आच्छा लागता हाय? नोनता ना मिट्ठा।

फुचाइ झा—मीठ।

कुन्दू—बास, बास। क्पियर हो गिया। सिमटाम मिल गिया। [बक्सा खोलि किछु दाना निकालि कए दैत] एइ ठांढा जल के साथ खाने से शब दोरुस्त हो जायगा। [कुन्दू क प्रस्थान। होमियोपाथी दवाइ खेबाक संगहि दर्द और बढ़ि जाइत छन्हि। तखनहि एलोपैथिक डाक्टर अबैत छथि। खूब फीट-फाट छथि, किन्तु बुझना जाइछ जे हड़बड़ी मे छथि। अबितहि चोंगा लगा कए छाती आ' पीठ क जाँच करैत छथि! तखन आँखि, जी और पेट देखैत छथिन्ह। लगलहि बिना किछु पुछनहि एक कागज निकालि कए चट द' पुर्जा—प्रेसक्रिपशन लिखि दैत छथिन्ह।]

डाक्टर—तेल-घी के बनल कोनो चीज नहि खाथि आ' खट्टा, मीठा तथा कड़ू सँ सेहो परहेज राखथि। हे, ई टैबलेट दोकान सँ मँगबा लियह; आध-आध घण्टा पर देबैक। आ' इंजेक्शन मँगबा कए कोनो छोटका डाक्टर वा कम्पाउण्डर सँ दिया देबैक। अच्छा नमस्कार! [डाक्टर धड़फड़ा कए जा रहल छथि।]

मोहन—किन्तु, एकरा भेल की छैक डाक्टर साहब?

डाक्टर—ताहि सँ अहाँ कें कोन काज? जेना कहलहुँ तेना करू

आ' [अपन घड़ी दिसि देखैत] हमर समय जुनि नष्ट करू।
और कतेको पेशेंट देखबाक अछि। [डाक्टर आँधी जकाँ
निकलि जाइत छथि आ' सब अवाक् रहि जाइत छथि।]

मोहन—टाका पेशगिये जमा करा लेने छथि त हिनका रोगी क
मुइला-जीला सँ कोन सरोकार ? ईह बड़का डाक्टर !

फुचाइ झा—ईह, डाक्टर ! चांडाल कहाँक नहि तन ! ठक !
पक्का ठक !

माया—बाप रौ बाप ! मा...य गे... !

फुचाइ झा—आब !

मोहन—आब !

[सब एक दोसरा दिसि असहाय जकाँ देखैत छथि। माया
"बाप रौ बाप !" क' रहल अछि कि तखनहि मंच पर
अन्हार पसरि जाइछ।]

यवनिका-पतन

तृतीय अंक

प्रथम दृश्य

स्थान—[माया क प्रकोष्ठ। मंच पर प्रकाश होइतहि देखल जाइछ जे एक दिसि मोहन माथ पर हाथ देने बैसल छथि आ' दोसर दिसि माया क खाट लग फुचाइ झा माथ पर हाथ देने बैसल छथि। देखना जाइछ जे माया निद्रा-निमग्न अछि। केवल बीच-बीच मे कनेक 'आहि ओहि' क' लैत अछि।]

फुचाइ झा—मोहन, बुझाइछ जे एखनि धरि रोग-मुक्ति नहि भेल अछि। हमर मन बड़ व्याकुल भ' रहल अछि।

मोहन—पीसा, एखनि हमरा मन पड़ल जे एक हमर परिचित डाक्टर काल्हिये एतय आयल छथि। मधुबनी मे हुनक बहिन रहैत छथिन्ह। पटना मे बड़ नाम छन्हि। कही त बजा लाबियन्हि। शायद पैसो नहि लेताह; हमरा सँ कनेक अपेक्षे भाव जकाँ छन्हि।

फुचाइ झा—पैसो नहि लेताह आ' नीक डाक्टर छथि। तखन बजाइये आनियन्हु। [मोहन जाइत छथि। माया क छटपटाएब और बढ़ि गेल छन्हि। मोहन फेर घुरि अबैत छथि।]

मोहन--पीसा, मोकरमपुरवाली दीदी ओझा कें पठा भेजल-थिन्ह रहै। से ओ आबि रहल छथि। जनी-जात सब बजैत जाइछ जे एकर माइये जकाँ एकरो क्यो बान मारि देने छैक। हे इयैह, ओझा त आबिये गेलाह। तखन हम ओहि डाक्टर कें बजा लाबियन्हि वा छोड़ि दियन्हि ?

फुचाइ झा—हँ हौ। जौं ओ पैसा नहियें लेथुन्ह त बजैबा मे हरजे की ? बजा लाबहुन्ह गे।

[मोहन क प्रस्थान। प्रस्थानोद्यत मोहन कें कनेक धक्का दैत तखनहि हहाएल जकाँ ओझा क प्रवेश। ओझा गेरुआ रंगक धोती कें जाँघ सँ ऊपर धरि खोंसने छथि। बाँहि मे, गट्टा मे आ' गर मे रुद्राक्ष क माला, माथ मे जटा आ' बगल मे लटकल एकटा झोरी छन्हि। एक हाथ मे बड़का चुट्टा आ' दोसर मे त्रिशूल छन्हि। चन्दन तथा भस्म सँ भेष और बिकराार भ' गेल छन्हि।]

ओझा—बेकार, बेकार ! ई डाकदर-बैद सब बेकार। डाकदर-बैद त रोग के ने ओषधि दैत ? ई त साफ छियैक डाइन क कैल।

फुचाइ झा—बैद-डाकदर त हारलाह। आब देखा चाही। अहीं क पुण्य-प्रतापें जौं नीक भ' जाइक.........!

ओझा—से अहाँ देखैत ने रहियौक। नीक कोना नहि हेतैक ?

[झोरा उतारि कए भाभट पसारै लगैत छथि। मारि घोंघा, सितुआ, शंख, खपड़ी आ' हाड़-गोड़ कें वृत्ताकार

रूप मे पसारि दैत छथिन्ह् ।] कनेक अछि जल लाउ त ।

फुचाइ झा—[दौड़ि कए जल ल' आवैत छथि ।] हे इयैह अछि।

ओझा—कनेक पीरा सरिसव हैत ? नहि त माँगि लाउ गें ककरो सँ ।

फुचाइ झा—[दौड़ल-दौड़ल सेहो ल' आवैत छथि ।] हे, लेल जाउ सरिसव ।

ओझा—[सरिसव क दाना ल' कए] आब देखैत जाउ करामात । आइ ई हरजैया डाइनियें छथि कि हमहीं । दू मे एक गोटेक लहास गिरनहि । [सरिसव क दाना अपन चारू कात छींटैत जाइत छथि और मंत्र पढ़ने जाइत छथि—]

अंग बान्हौं, बान बान्हौं,
औघड़ बाबा, समांग बान्हौं,
जग्गू बाबा, पीठ बान्हौं,
भैरो बाबा, गरदनि बान्हौं,
पेट बान्हौं, छाती बान्हौं,
तेलिया मसान, कपार बान्हौं,
चल जोगिनी, छू मन्तर !
आ, कमच्छा माइ ।

[सरिसव क दाना मंच क चारू कात छींटैत जाइत छथि और इयैह मन्त्र दोहराबैत छथि । पुनः ठाढ़ भ' कए आन मन्त्र सँ देह बान्हैत छथि ।]

जल बान्हौं, थल बान्हौं,
तीनो कोन पिरिथमी बान्हौं,
काया बान्हौं, माया बान्हौं,
दीढ़ कए करेज बान्हौं,
दोहाइ गौरा - पारवती !
दोहाइ नोना चमाइन।
आ, कमच्छा माइ।
इन्ने बान्हौं, उन्ने बान्हौं,
बान बान्हौं, कमान बान्हौं,
हरखन बान्हौं, धरखन बान्हौं,
कोकिया माय के करेज बान्हौं,
इंग बान्हौं, हींग बान्हौं,
धरकट-मरकट-करकट बान्हौं,
इलल बान्हौं बिलल बान्हौं, पढ़ौं पीरा सरसों !
दोहाइ गौरा - पारबती।
दौहाइ नोना चमाइन।
आ, कमच्छा माइ।

[दर्शक-वृन्द दिसि देखैत] खबरदार ! खबरदार ! आब जी नहि क्यो निकालैत जाएब। आ' हे, छाती नहि उघार राखै जाएब ! दुनू दिसि सँ बान चलतैक। खबरदार ! [जोर सँ] सावधान भेलहुँ ?

फुचाइ झा— भ' गेलहुँ।

ओझा—[गत्तर-गत्तर हिलबैत आ' आँखि-मुँह चमकाबैत ई मंत्र पढ़ि रहल छथि—]

कामरू देस कमच्छा माइ,
जहाँ बसे इसमाइल जोगी।
इसमाइल लगाओल फुलवाड़ी,
फूल बिहुँसे, फूल लोढ़ै नोना चमाइन।
अष्ट के मुष्ट प्रताप निवारन,
मारहु बान डाइन के छाती।
झनक पड़ल गोरख के कान,
गोरख लए झोरा छोड़लन्हि बान।
झनक पड़ल तेलिया मसान,
तेलिया लए छोड़ल रकत के बान।
छू मन्तर लगा कमच्छा माइ।

[सामने तर्जनी सँ इंगित करैत] हे, हे, हे देखियौक, हे, वैह। डाइन चित्त भ' गेल; छटपटा रहल अछि। दुहाइ गुरु नोना चमाइन! हा-हा-हा-हा! हा-हा-हा-हा! [जोर सं गर्जन करैत] हे ये, हे वे, पड़ाबै नहि। बाप रे, ई त ब्रह्म-पिचाश छियैक। रह, रह; पड़ाबै नहि देबौ आब। [पसारा क चारो दिसि पैंतराबाजी क' कए घूमि-घूमि कए नाचैत-नाचैत पढ़ैत जाइत छथि।]

ओम् नमो बिसमिल्ला, रहीम रहमान,
गजनी से चलला मोहम्मद पीर,

चढ़ि चलला।
सवा सेर के तोसा खाय,
अस्सी कोस के धावा जाय।
सफेद घोड़ा, सफेद लगाम,
ओइ पर चढ़य मोहम्मद पीर।
नौ सौ पलटन आगाँ चलय,
नौ सौ पलटन पाछाँ चलय।
चल-चल रे वीर,
तोहर समान आन नहि कोइ।
हम्मर शत्रु कें पकड़ि कए आन,
हाड़-हाड़, चाम-चाम, नख-सिख,
रोम-रोम सँ पकड़ि कए आन।
सिलार जिन्ह पीर-भरता,
पीटंत, पछाड़ंत, तोड़ंत, फोड़ंत,
हाथ मे हथकड़ी, पैर मे तौख,
उलटे मुसुक चढ़ाओल आनह।
भूत क चटनी, डाइन क भर्त्ता,
नाचैत-नाचैत आवै डाइन आ' कूदैत आवै भूत।
दोहाइ कमच्छा माइ।

हे इयैह; पकड़लहुँ, पकड़लहुँ। हा-हा-हा-हा ! जा, छिटकि गेल !!

माया—माइ गे माइ, प्राण जाइत अछि गे माइ। बाबू हौ बाबू।

ओझा—कोनो परबाहि नहि। हे, इयैह [चुट्टा उठा कए देखबैत] चुट्टे क मारि सँ एखनहि हम भगा नहि देलियन्हि त कहिह। पिशाचक कैदा छियैक जे ओ पैर दिसि सँ पड़ा कए ऊपर चढ़ल जाइत आ' माथ पर सँ फाँनि कए कूदि पड़त। हे, देखियौक। [पसारा क चारो कात चुट्टा पकटि-पटकि कए मंत्र पढ़ि रहल छथि।

कं कंकं कंकं काली मैया,
ह्रीं क्लीं फट!
चं चंचं चंचं चामुण्डा मैया,
ह्रीं क्लीं फट!
टं टंटं टंटं टंटा मैया,
ह्रीं क्लीं फट!
तं तंतं तंतं तारा मैया,
ह्रीं क्लीं फट!
पं पंपं पंपं पार्वती मैया,
ह्रीं क्लीं फट!
बं बंबं बंबं बंबा मैया,
ह्रीं क्लीं फट!
शं शंशं शंशं शंकरी मैया,
ह्रीं क्लीं फट!
हं हंहं हंहं हिडिम्बा मैया,
ह्रीं क्लीं फट!

[तत्पश्चात् आवेश मे आबि "ह्रीं क्लीं फट" क आवृत्ति कैने माया दिसि अबैत छथि आ' दनादना चुट्टा बजारैत लगैत छथिन्ह और पैर पर क्रमे-क्रमे चुट्टा ऊपर जाँघ दिसि बजरैत अछि। एक बेर क' ह्रीं क्लीं फट! करैत छथि आ' 'फट' क संगहि-संग चिमटा बजारि दैत छथिन्ह।]

माया—[आतंकें] माइ गे माइ, बाप रे बाप। आब नै हौ बाबू।

ओझा—[फुचाइ झा सँ] अहाँ फिकिर जुनि करू। ई पिशाचक विलाप छियैक एकरा पर ममता जुनि करि। [पुनः चुट्टा उठा कए उसाहैत छथि] ओम् ह्रीं क्लीं—

माया—[तावत आतंकें चिकरि उठैत अछि] दर्द छुटि गेल।

ओझा—हे देखियौक, देखलियैक मंत्र क प्रभाव? नीचाँ सँ जाँघ धरिक दर्द एकदम छूटि गेल ने?

माया—एकदम छूटि गेल।

ओझा—किन्तु डाँड़ सँ ऊपर दिशा क दर्द नहि छुटल हैत ने?

माया—नहि छूटल अछि।

ओझा—[पुनः चुट्टा लगाबे दियह। ओम् ह्रीं क्लीं फ......

माया—[तावत् आतंकें उठि कए बैसि जाइत अछि आ' चिकरि उठैत अछि] पेट क दर्द छूटि गेल, छूटि गेल।

ओझा--किन्तु पीठ आ' छाती क दर्द त नहि छूटल अछि ने? पीठ पर लगबे दिथह। [जोर सँ] ओम् ह्रीं क्लीं......

माया—[और जोर सँ चिकरैत] नहि, नहि पीठो क दर्द आ' छातियो क दर्द छूटि गेल।

ओझा—हा-हा-हा-हा, अरे छूटत कोना नै? देखलियैक? [फुचाइ झा दिसि देखैत] देखलियैक अहाँ मंत्र क प्रभाव? आ हा-हा-हा-हा। लेकिन हे वैह। वैह हम देखि रहल छियैक। सौंसे देह छोड़ि कए ई पिशाच बेचारी क माथ पर चढ़ि गेलैक अछि। हे, हे, वैह। झोंटा मे नुकाएल अछि। ओ माथ पर सँ फाने चाहैत अछि, किन्तु हम पड़ाबै नहि देबन्हि। पकड़, पकड़ [लपकि कए माया क झोंटा पकड़ि लैत छन्हि आ' झोंट खींचि कए छीरी-बीरी क' दैत छन्हि।]

माया—बाप-रे-बाप। हमरा छोड़ि दियह।

ओझा—छोड़ि कि ओहिना देब? देखैत ने रहियौक।

माया—छूटि गेल। हमर दर्द एकदम छूटि गेल।

ओझा—हा-हा-हा हा! छूटि जैबे करत। पूरा आराम भ' गेलहुँ ने?

माया—हँ।

ओझा—अच्छा, एमहर आउ त। [कठोर स्वर मे] जल्दी। [आबैत अछि।] ओमहर जाउ त। [माया ओमहर जाइत अछि।] अच्छा; बाबूजी कें प्रणाम करियन्हु। [पैर छुबि कए प्रणाम करैत अछि।] हमरा प्रणाम करू। [सेहो करैत अछि।] अच्छा; आब हँसू त।

माया—[ओझा क मुख दिसि बकर-बकर देखैत] आँय !

ओझा—[चुट्टा पटकि कए कर्कश स्वर मे] लाज-धाख छोड़ि कए एक बेर हँसू ने !

माया—[कातर जकाँ कठहँस्सी हँसैत] एँ हेँ-हेँ, हेँ-हेँ।

ओझा—[ठहाका मारैत] आ-हा-हा, हा-हा ! देखलियैक ?

[माया दिसि देखैत आदेश दैत जकाँ चुट्टा पटकि कए]

हँसू—ह-ह-ह-ह, ह-ह-ह-ह।

माया—ह-ह-ह-ह, ह-ह-ह-ह।

ओझा—[मुक्त कंठेँ] हा-हा-हा-हा, हा-हा-हा-हा।

माया—[मुक्त कंठेँ] हा-हा-हा-हा, हा-हा-हा-हा।

ओझा—ही-ही-ही-ही, ही-ही-ही-ही।

माया—ही-ही-ही-ही, ही-ही-ही-ही।

ओझा—हू-हू-हू-हू, हू-हू-हू-हू।

माया—हू-हू-हू-हू, हू-हू-हू-हू।

ओझा—हे-हे-हे-हे, हे-हे-हे-हे।

माया—हे-हे-हे-हे, हे-हे-हे-हे।

[दुनू क हँसब क्रमे-क्रमे उच्च सँ उच्चतर स्वर मे भेल जाइत छन्हि कि अकस्मात ओझा चुट्टा पटकैत छथि आ' दुनू क हँसब बन्द भ' जाइत छन्हि।]

ओझा—[फुचाइ झा दिसि देखैत] देखलियैक ?

फुचाइ झा—[किछु विस्मित और किछु आनन्दित जकाँ ओझा क पैर पकड़ि लैत छथि] धन्य छी अपने; धन्य छी।

ओझा—धन्य कि ओहिना छी ? चौबीस वर्ष धरि राति राति भरि मसान साधने छी। ओहिना नहि।

फुचाइ झा--[पैर पकड़ि] अपने धन्य छी; हमर जान बचा लेल।

[ओझा अपन पसारा क सब सरंजाम उठा-उठा कए झोरा मे राखि रहल छथि। बीच-बीच मे फुचाइ झा तथा माया दिसि देखि लैत छथि।]

ओझा—[फुचाइ झा दिसि साकांक्ष भए] हमरा आइये एक जोड़ करिया कम्बल, एक जोड़ करिया चद्दरि, एक जोड़ करिया पाठी, एक जोड़ करिया कबूतर और एक जोड़ कोनो करिया फूल पठा देब—अवश्य। आ' पूर्ण श्रद्धा राखब मन मे। से नहि कैने एकरा पुनः पिशाच ध' लेतैक। होशियार! [उच्च स्वरें] जय मा काली कलकत्तेवाली [बाजैत-बाजैत बहरा जाइत छथि।]

माया—[घोर संकट सँ त्राण पाबि उसाँस फेंकैत जकाँ] ह-ह। प्राण बाँचल। ई त मारि चुट्टा मारि चुट्टा हमर गत्तर-गत्तर भकभका देलक।

फुचाइ झा—[व्यग्रता-पूर्वक] हे, अविश्वास जुनि करी, नहि त.........

माया—हमरा दर्द कतय छूटल अछि? ई त चुट्टा क डरें हम सरपंज भेल छलहुँ।

फुचाइ झा—[व्यग्र अनुरोध भरल स्वर मे] विश्वास करें!

माया—विश्वास करू?

फुचाइ झा—हँ; विश्वास करें माया! विश्वासे सँ भगवान...

माया—आ......ह! फेर दर्द होमै लागल।

[तखनहि मंच पर अन्हार पसरि जाइछ।]

———

द्वितीय दृश्य

[स्थान पूर्ववत्। माया 'आहि-ओहि क' रहल अछि। फुचाइ झा सेहो व्यग्र छथि। तखनहि ठोप-चानन-धारी एक सज्जन क संग मोहन क प्रवेश। एहि सज्जन क एक हाथ मे पत्रा और दोसर हाथ मे पोथी क छोट-छीन पुलिन्दा छन्हि। वेश-भूषा सँ पैघ पण्डित वा गुणी जकाँ बूझि पड़ैत छथि।]

मोहन—डाक्टर साहब भोजन क' रहल छलाह। एक गोटे कें संग ल' कए लगले आबि जैताह। [संग क नवागन्तुक दिसि देखबैत] आ' ई काशीजी क ज्योतिषी छथि। वैदिक जी क ओहि ठाम आयल छलाह। हमहीं बजा आनलियन्हि।

फुचाइ झा—[किछु प्रभावित जकाँ] नमस्कार !

ज्योतिषी—नमस्कार-नमस्कार।

फुचाइ झा—अपने ज्योतिषी छी ? बड़ नीक अवसर पर ऐलहुँ। अपने कि बिना कुण्डली देखने लोग क भाग्य बता सकैत छियैक ?

ज्योतिषी—बता त सकैत छी हम भूत, वर्त्तमान आ' भविष्यक प्रत्येक बात। चौबीस वर्ष धरि काशी मे रहि कए इयैह भृगु-संहिते जखन पढ़लहुँ तखन हमरा लेल भाग्य बताएब कोन कठिन कार्य भेल ?

फुचाइ झा—तखन बताउ त जे हमरा भाग्य मे की अछि ?

ज्योतिषी—देखू, हम जानी साफ बात। हम बता देब सब किछु, लेकिन हमर नियम अछि जे आदमी पिछू कम-सँ-कम दू टाका ली।

फुचाइ झा—जौं सब किछु बता दी त हमरा ई स्वीकार अछि।

ज्योतिषी—बेस; त अपन नाम बताउ।

फुचाइ झा—हमर नाम अछि फुचाइ झा।

ज्योतिषी—फुचाइ झा। अर्थात् फकारादि। फ सँ पावक। अर्थात् पाँच। तकरा गुणा करू सात सँ। तखन तीन घटा दियौक। [किछु काल धरि पटर-पटर क' कए आँखि मूनि आध मिनट क लेल ध्यानस्थ भ' जाइत छथि। फेर आँखि खोलि लैत छथि। आँखि चमकि रहल छन्हि जेना कौनो वस्तु स्पष्ट देखि रहल होथि। तखन मुसकियाबैत छथि।] अच्छा, बताउ त जे प्रथम अहाँ क जीवन क भूत कालक वर्णन करी वा भविष्य क ?

फुचाइ झा—भूत कालक वर्णन भेने किछु विश्वास दृढ़ होइत छैक; से त बुझितहि छियैक।

ज्योतिषी—अच्छा, बेश। भूतकाल त बड़ व्यापक होइत छैक, लेकिन अहाँ क परिवार क किछु गुप्त बात बता दैत छी।

फुचाइ झा—बताउ।

ज्योतिषी—अहाँक स्त्री बड़ गुणवती छलीह। ओ तुलसी-चौरा पर जल बिना ढारने कहियो अन्न-जल ग्रहण नहि केलन्हि।

फुचाइ झा—हँ, से त ठीक कहैत छी।

ज्योतिषी—ओ गौर-वर्णा और अति सुन्दरी छलीह। लाल साड़ी आ' टिकुली बेसी पसिन छलन्हि। अहाँ जहिया कहियो दड़िभंगा जाइत छलहुँ तहिया चुनि-चुनि कए हुनका लेल टिकुली अवश्यहि आनैत छलियन्हि।

फुचाइ झा—हँ; इहो ठीके कहैत छी।

ज्योतिषी—अहाँ पहिने सब दिन रतुका भोजन मे केवल उसनल अल्हुआ आ नून खाइत छलहुँ, किन्तु स्त्री जहिया अपन शप्पत द' कए जिद केलन्हि तहिये सँ अहाँ अल्हुआ छोड़ि कए मकइक रोटी खाएब आरम्भ क' देने छी।

फुचाइ झा—हँ; इहो ठीक।

ज्योतिषी—अहाँ लाख सँ बेसी टाका माटि तर गाड़ि कए रखने छी, लेकिन कतय रखने छी, ई ककरो नहि बतौने छियन्हि।

फुचाइ झा—जाय दियह ई सब बात। आब हमरा पूर्ण विश्वास भ' गेल।

ज्योतिषी—वर्त्तमान मे अहाँ घोर विपत्ति मे छी, कियैक त अहाँ क घर मे [कनेक रुकि जाइत छथि]........

फुचाइ झा—बाजू ने, बाजू ने। हमरा घर मे की ?

ज्योतिषी—अहाँ क घर मे [कनेक रुकि कए] मृत्यु-योग अछि। [फुचाइ झा माथा हाथ ध' लैत छथि।] ई त अहाँ क कन्या थिकी ने ?

फुचाइ झा—हँ।

ज्योतिषी—हिनक नाम माया थिकन्हि ने ?

फुचाइ झा—हँ।

ज्योतिषी—हिनका असाध्य रोग भेल छन्हि।

[तखनहि कनेक दूर सँ रमेश क स्वर सुनाइ पड़ैछ।]

रमेश—[नेपथ्य सँ] मोहन बाबू छी औ, मोहन बाबू ?

मोहन—आउ औ रमेश बाबू। [अगुवा कए हुनका सम्मान-पूर्बक ल' अबैत छथि। फुचाइ झा दिसि देखबैत] इयैह हमर पीसा छथि।

रमेश—प्रणाम !

फुचाइ झा—आशीर्वाद।

मोहन—आ' इयैह छथि रमेश बाबू, हमर मित्र। डाक्टरी पास क' कए एही वर्ष सँ ई हाउस-सर्जन क काज क' रहल छथि।

ज्योतिषी—त डाक्टर साहब कें जाँच करै ने दियन्हु।

फुचाइ झा—बेस।

[रमेश माया क परीक्षण करैत छथि। नाड़ी, आँखि, जिह्वा आदि देखला क उपरान्त चोंगा लगा कए जाँचैत छथि।]

रमेश—[चिन्तित जकाँ] रोग क त कोनो पते ने चलैत अछि। हमरा बुझाइछ जे हिनका पटना वा लहेरियासराय ल' जैवाक चाही।

माया—[उच्च स्वरें] आब नै गे माय ! प्राण गेल गे !

रमेश—बाहर सँ त किछुओ ने बुझाइ पड़ैछ, मुदा भ' किछु अवश्ये रहल छन्हि।

ज्योतिषी—कहलहुँ ने, अहाँ क कन्या कें असाध्य रोग छन्हि।

फुचाइ झा—[अत्यन्त व्याकुलता-पूर्वक] तखन ?

ज्योतिषी—ई किन्नहु नहि बचतीह। घंटा दू घंटा क मेहमान छथि।

फुचाइ झा—[कनमुहँ जकाँ] तखन ?

ज्योतिषी—हिनकर आयु त एखनि छन्हि, किन्तु.........

फुचाइ झा—किन्तु की ? कोनो उपाय छैक की ?

ज्योतिषी—एकहि टा।

फुचाइ झा—से की ?

ज्योतिषी—स्वामी-संयोग।

फुचाइ झा—स्वामी-संयोग? अर्थात् बियाह? नारायण-नारायण

ज्योतिषी—हँ। आ' सेहो घंटा वा दू घंटा क अन्दरे। अन्यथा कौनो आशा नहि।

फुचाइ झा—ई कोना हेतैक? वर कि कतहु धरल छैक जे चट द' लए आनब आ' पट द' बियाह क' देबैक?

ज्योतिषी—से जे हो आ' जेना हो, उपाय त इयैह टा अछि।

फुचाइ झा—बियाह हिनका लिखल छन्हि?

ज्योतिषी—लिखल त छन्हि हिनका आकस्मिक विवाह।

फुचाइ झा—नारायण-नारायण! हे लीलाधारी, आब तोहीं टा एहि संकट सँ उबारि सकैत छह! किन्तु......किन्तु ई भ' कोना सकैछ? एक त वर क सन्धान, दोसर पुरहित, नौआ आ' धी-सुवासिन कें जुटाबैत-जुटाबैत......बाप रे!

मोहन—सब भ' सकैछ। इयैह त छथि हमर रमेश बाबू—नीक घर, नीक वंश! सोदरपुरिया सरिसब......।

रमेश—[अत्यन्त चकित मुद्रा मे] आँय! अहाँ त हमरा...... नहि-नहि! भला ई कोना?

मोहन—रमेश बाबू, एहि संकट सँ अहीं टा हमरा लोकनिक उद्धार क' सकैत छी। निराश जुनि करू! हम हाथ जोड़ि कए याचना करैत छी......!

ज्योतिषी—आ' प्राण-रक्षा सन पुण्य काज!

मोहन और फुचाइ झा—[कनमुँह जकाँ समवेत स्वर मे] रमेश बाबू!

रमेश—बेस; हम तैयार छी! भगवान क इच्छा!

फुचाइ झा—आ' पुरहित?

रमेश—इयैह त छथि ज्योतिषी छी ! इयैह पुरहित बनि कए बियाह करौताह आ' नौआ, खवास, बिधकरनी जे बुझू से सभक काज हमही क' लेब ।

ज्योतिषी—हमरा समय त नहि छल, किन्तु बेस; एहि पुण्य काज मे......!

फुचाइ झा—बस; त अहाँ सभक जे इच्छा !

मोहन—[तखनहि मंच पर अल्प अन्धकार भ' जाइत छैक और मोहन धड़फड़ा कए एम्हर सँ ओम्हर जाइत जोर-जोर सँ शोर पारैत छथि] औ कंटीर बाबू, हे करिया काकी, आ' ये नैहरावाली भौजी छी ये, हो बच्चू छ' हौ, रे गुलटेनमा ! अरे; जल्दी बियाह क ओरियाउन करैत जा। [ओम्हर एक-एक क' कए मंच पर लोक सब जुटि गेल अछि। सब मिलि कए तुमुल कोलाहल क' रहल छथि। अन्धकार घनीभूत भ' जाइत अछि और तखनहि प्रकाश क संगहि पछिलका पर्दा उठैत अछि। वेदी पर बिवाह क दृश्य। बर क हाथ पर कन्या क हाथ छन्हि और पुरोहित मन्त्र पढ़ा रहल छथिन्ह]

पुरोहित—ओम् व्रतमेते हृदयं दधामि; मम चित्तम् अनुचित्तन्ते अस्तु।

रमेश—ओम् व्रतमेते...... [कि तखनहि नेपथ्य सँ स्त्रिगणक गीत-नाद सुनल जाइछ]

प्रिय पाहुन सिन्दुर-दान करू !

एखन ने किछु हठ मान करू। प्रिय पाहुन सिन्दुर दान करू।

यवनिका-पात

लेखक परिचय

प्रबोध नारायण सिंह

१. हिन्दी साहित्य सम्मेलन सँ साहित्यरत्न एवं हिन्दी विद्यापीठ सँ साहित्यालंकार।

२. पटना विश्वविद्यालय सँ संस्कृत मे प्रतिष्ठा एवं कलकत्ता विश्वविद्यालय सँ हिन्दी, पालि, फारसी तथा भाषा-विज्ञान मे एम० ए०।

३. कलकत्ता विश्वविद्यालय सँ डी० लिट०।

४: अरबी, उर्दू, अंगरेजी और मैथिली क सामान्य अध्ययन।

५: कलकत्ता विश्वविद्यालय क हिन्दी, पालि, अरबी - फारसी तथा भाषा-विज्ञान क स्नातकोत्तर विभाग क बोर्ड ऑफ स्टडीज क सदस्य।

६. साहित्य अकादमी क परामर्श-समिति क सदस्य।

७. साहित्य क विविध विधा मे कतिपय ग्रन्थ क प्रणेता।

८. सम्प्रति कलकत्ता विश्वविद्यालय मे स्नातकोत्तर हिन्दी विभाग, पालि विभाग तथा भाषा-विज्ञान विभाग मे प्राध्यापक।

—:※:—